भजन

तर्ज : धीरे–धीरे बोल कोई सुन ना ले

राजश्यामा सखियाँ प्यारी, इनकी लीला है न्यारी
धाम धनी के लाड की, वो आप ही जाने साहेबी.

1. निजघर वाले खेलन के जो ठौर, रूहों बिना नहीं जाने कोई और
निसबत जिनकी वो ही पायें प्यार, प्यार भी ऐसा जिसका नहीं शुमार
पिया पास हैं, संग साथ है, आनन्द के सब साज हैं
खुशहाली है हर बात की, और मस्ती है दिन रात की

2. चले कभी सुखपालों में श्री राज, बैठे हैं श्री श्यामा जी भी साथ
बाग बनों में या मन्दिर मोहलात, पर्वत माणिक या पर्वत पुखराज
कभी खेलना, कभी दौड़ाना, कभी झीलना, कभी झूलना
कभी रंग मोहोल की चाँदनी, ले बैठे सैंया आपनी

3. तखतरवा में रूहें बारह हजार, करने चली हैं प्रीतम संग विहार
आठों सागर आठ जमीं का नूर रंग बिरंगी शोभा से भरपूर
कई जात के, कई भाँत के, पसु पंखीयों, के राग है
ये बुजरकियाँ, श्री राज की और शब्दातीत के ठाठ की